Gyanvividha [A Peer Reviewed and Refereed Journal] March 2024 : Year-1, Vol-2 : PP-59-62

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)59-62
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. श्रीकांत लक्ष्मणराव आरले
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट
ई-मेल- shriarale@cuo.ac.in
मो.नं.- 957356559

Corresponding Author :

डॉ. श्रीकांत लक्ष्मणराव आरले
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट
ई-मेल- shriarale@cuo.ac.in
मो.नं.- 957356559

अनुवाद और रोजगार अर्जन के अवसर

बदलते समय के साथ समाज के मानवीय मूल्यों में भी बदलाव आया है। आज के समय में अर्थ ही सबकुछ हो गया है। इसलिए सारा मानव समाज अर्थार्जन करनें में लगा हुआ है। अर्थार्जन की योग्यता के लिए शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है। लेकिन सवाल खड़ा होता है कि क्या हम दावे के साथ कह सकते हैं कि शिक्षा ग्रहण करने पर रोजगार मिल ही जायेगा? मेरा कहने का उद्देश्य यह है कि आज के समय में युवाओं के सामने सबसे बड़ी समस्या है- बेरोजगारी की। हमारे देश में 70 प्रतिशत युवक-युवतियाँ इस समस्या से पीड़ित हैं। ऐसे में युवकों के सामने कहाँ जाये, क्या करे? जैसे सवाल खड़े होते हैं।

बहुभाषिक तथा विदेशी भाषा को अतिथि जैसा सम्मान देने वाले भारत जैसे देश में युवाओं को रोजगार पाने के अनेक मार्ग हैं। जरूरत है तो सिर्फ दृष्टि दौड़ाने की, सोच बदलने की और मेहनत करने की। इस देश की बहुभाषिक मनुष्य जाति को तथा विदेशी भाषा के मनुष्यों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए एक सशक्त माध्यम की जरूरत होती है। वह सशक्त माध्यम है- अनुवाद।

हमारे देश की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग होता है। संविधान में उसे राजभाषा का दर्जा भी प्राप्त है। ऐसे में स्थानीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं के ज्ञान को अनुवाद के माध्यम से हिंदी में लाकर लोगों तक पहुँचाया जाता है। वैसे भी भारतीय संविधान के अनुच्छेद- 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश भी दिया गया है। इस दृष्टि से भारत सरकार के सभी मंत्रालय, कार्यालय, औद्योगिक तथा

प्रौद्योगिक विभागों, उपक्रमों आदि में हिंदी के अनुपालनार्थ हिंदी अनुवादक पदों का सृजन हुआ है। यहाँ तक कि रेलवे भर्ती बोर्ड तथा संसद में भी अनुवाद का कार्य तथा अनुवादक की भर्ती की जाती है।

अनुवाद की शिक्षा प्राप्त करने वाले युवक-युवतियों को रोजगार पाने से कोई नहीं रोक सकता है। अर्जुन चव्हान जी ने सही ही कहा है कि, "भारत देश के संबंध में कहे तो यहाँ केंद्रीय कार्यालयों में प्रतिवर्ष लगभग साढे चार सौ-पाँच सौ अनुवादक के पद निकलते हैं किन्तु मुश्किल से दस-बीस अनुवादक मिलते हैं। क्योंकि देश में अब भी अनुवाद पद्विका अथवा पदवी पाठ्यक्रम उतनी अधिक मात्रा में नहीं चलाये जाते हैं।... जितने भी युवक-युवतियाँ अनुवाद का कोर्स सफलता से पूर्ण करते हैं वे सब कहीं न कहीं नौकरी अवश्य पाते हैं। फलतः बेकारी से छुटकारा पाने तथा रोजी-रोटी की समस्या को मिटाने की दृष्टि से भी अनुवाद एक उपयोगी स्रोत सिद्ध हो रहा है।" अनुवाद के महत्त्व में वृद्धि तब हुई जब सन् 1965 के बाद राजभाषा अधिनियम तथा राजभाषा नियम – 1976 के कारण देश में द्विभाषिकता की स्थिति उत्पन्न हुई। इसका प्रमाण है, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुवाद की पुस्तकों पर 'नातालिक' पुरस्कार की घोषणा करना। इसी के साथ पूर्व प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंह राव ने एक विशेष कोष की स्थापना की जिसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं में सामग्री अनुदित करना था। इसी उद्देश्य से मनमोहन सिंह की पहल पर गठित किए गए राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (एनकेसी) के तहत राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (एनटीएम) का गठन किया गया। जब इस मिशन में अनुवादकों के पंजीकरण की शुरूआत हुई तो भारी तादाद में पंजीकरण हुए। इसलिए अनुवाद भी बहुत बड़ी मात्रा में जीविकोपार्जन का माध्यम बन गया है।

हम साहित्यिक लोगों के ज़ेहन में अनुवाद कहते ही केवल साहित्य-अनुवाद ही आता है। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। भूमंडलीकरण के समय में अनुवाद का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक रूप धारण करता हुआ दिखाई देता है। साहित्य, व्यापार, उद्योग, फिल्म, सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, पर्यटन क्षेत्र, बहुराष्ट्रीय व्यापारिक प्रतिष्ठानों, आशु-अनुवाद, जनसंचार माध्यम, अंतरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में अनुवाद का कार्य संपन्न होता है।

उपर्युक्त क्षेत्रों से संबंधित विश्वभर की जानकारी विभिन्न देशों के, विभिन्न भाषी नागरिकों को उनकी स्थानीय भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से प्राप्त होती है। इसलिए इन क्षेत्रों में अनुवादकों की अधिक मात्रा में आवश्यकता उत्पन्न होती है। आज अनुवादक इन क्षेत्रों में विपुल मात्रा में अर्थार्जन करते हुए दिखाई देते हैं। विकासशील समाज अध्ययन केंद्र (सीएसडीएस) से जुड़े रविकांत कहते हैं, "डिस्कवरी, नैशनल ज्योग्राफिक जैसे इन्फोटेनमेंट चैनलों के आने और हिंदी में डब फिल्मों का बढ़ता चलन अनुवादकों के लिए नई राहें खोल रहा है। इस वजह से अनुवादकों की मोलभाव की क्षमता बढ़ी है और उन्हें अपेक्षाकृत अच्छा मेहनताना मिल रहा है। इसके साथ ही गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ), अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और कारोबारी जगत को भी हिंदी के सहारे की बड़ी जरूरत है। कंपनियों को अपनी बात ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन से लेकर ब्रॉशर तक हिंदी में प्रकाशित कराने पड़ रहे हैं। इसकी वजह से भी अनुवाद के कार्यक्षेत्र का जबरदस्त विस्तार हुआ है। यही वह क्षेत्र है जो अनुवादकों को अपनी ओर खींच रहा है, जहां प्रति अनुवाद के लिए प्रति शब्द एक से दो रुपये का भुगतान होता है और कई स्थितियों में तो पांच रुपये प्रति शब्द तक पारिश्रमिक भी मिल जाता है।"

हिंदी आज बाज़ार की भाषा बन गयी है। हिंदी के इसी विस्तार के कारण हिंदी पाठकों की संख्या में इज़ाफा होते जा रहा है। पाठकों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए अनेक प्रकाशकों को विभिन्न भाषाओं से अनुवाद की आवश्यकता होती है। इसी कारण अनुवाद का काम करने वाले पेंगुइन, हार्पकॉलिंस और पियरसन जैसे प्रकाशन हिंदी बाज़ार में बस गये हैं। ऐसे में अनुवादकों के लिए घर बैठे रोजगार के अवसर बढ़ गए हैं।

उसी प्रकार पर्यटन का क्षेत्र भी अनुवादकों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। भारत जैसे ऐतिहासिक देश में विदेशी यात्रियों को पर्यटन स्थलों की जानकारी देने के लिए विदेशी भाषा के जानकार भारतीय अनुवादकों की आवश्यकता होती है। ऐसे में अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय जैसे केंद्रीय विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं से विदेशी भाषाओं का अध्ययन करने वाले

छात्र-छात्राओं को रोजगार मिलने से नहीं रहेगा। उसी प्रकार विदेशी भाषा अध्ययन में पदवी प्राप्त भारतीय युवक-युवतियों को अमेजोन, जेनपैक, गूगल जैसी भारतीय बाज़ार में बसी खाजगी कंपनियों में सालाना 5 से 9 लाख रूपयों का पैकेज भी मिल रहा है। यह सिर्फ बढ़ते बाज़ारवाद का परिणाम है। आज संपन्न देश अपने उत्पाद बेचने के लिए बाज़ार ढूँढ रहे हैं। ऐसे में भारत एक बहुत बड़ा बाज़ार सिद्ध हुआ है। प्रों एम. वेंकटेश्वर ने लिखा है कि, "भारत में वैश्वीकरण की बाज़ारवादी नीति के अंतर्गत बड़ी तेज़ी से आर्थिक विकास हो रहा है। व्यापार एवं वाणिज्य का क्षेत्र सबसे बड़ा क्षेत्र है जहाँ अनुवाद की सर्वाधिक माँग है। भारत जैसे बहुभाषी देश में विदेशी और स्वदेशी उत्पादों की बिक्री केवल किसी एक भाषा के माध्यम से नहीं की जा सकती। भाषा सम्प्रेषण का माध्यम होती है। किसी भी उत्पाद (माल) को बेचने के लिए वाचिक और लिखित (मुद्रित) रूप में विज्ञापन प्रणाली के द्वारा उस उत्पाद का प्रचार किया जाता है। यह प्रचार सामग्री अनेक भाषाओं में पेशेवर विज्ञापन विशेषज्ञ तैयार करते हैं। विज्ञापन का बाज़ार अनुवाद पर ही आधारित होता है। फिल्मों से लेकर उपभोक्ता वस्तु, कृषि, सर्राफा, घरेलू वस्तु, अनाज, कपड़ा आदि हर जीवनोपयोगी वस्तुओं के क्रय-विक्रय की सारी व्यवस्था आज अनुवाद द्वारा तैयार किए गए विज्ञापनों के द्वारा ही संचालित हो रही है। विश्व का सारा बाज़ार अनुवाद पर आश्रित है। ये अनुवाद स्वदेशी और विदेशी भाषाओं में भी करवाए जाते हैं। इस कार्य के लिए निजी क्षेत्र में बड़ी विज्ञापन कंपनियाँ बाज़ार में उतर गईं हैं। इस तरह अनुवाद का भी एक बहुत बड़ा बाज़ार है जो कि करोड़ों रुपयों का व्यापार करता है। विज्ञापन जगत में अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर अनुवाद भी एक उद्योग के रूप में उभरा है आज।"

इस प्रकार वैश्वीकरण के कारण भारत में व्यापार के लिए हिंदी की आवश्यकता पड़ने लगी। हिंदी के बढ़ते बाज़ार के कारण विदेशी कंपनियों को बड़े तादाद में हिंदी अनुवादकों की आवश्यकता हुई। ऐसे में अनेकों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। सुधीश पचौरी ने लिखा है कि, "जब भारतीय बाजार विदेशी कंपनियों के लिए खुल गया तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों को हिंदी पट्टी में एक बड़ा एकमुश्त बाज़ार नजर आया और इस बाज़ार तक पहुँचने के लिए हिंदी उनके लिए अपरिहार्य थी। आर्थिक सुधारों की शुरुआत करने वाला राजनीतिक तबका भी इस जरूरत से वाकिफ था।"

रोजगार के अवसर प्रदान करने वाले अनेक क्षेत्रों में जनसंचार माध्यम भी एक है। आज देश-विदेश में होने वाली घटनाएँ जनसंचार माध्यमों द्वारा चंद क्षणों में हमें अपनी स्थानीय भाषाओं में अनुवादित रूप में प्राप्त होती हैं। ऐसा होना अनुवादकों की कड़ी मेहनत से ही संभव है। इस क्षेत्र में हजारों-हजार चैनल कार्यरत हैं। तो सोचा जा सकता है कि कितने अनुवादकों को इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर मिल रहे होंगे।

आशु-अनुवाद का भी एक क्षेत्र इसमें जुड़ता है। दुभाषिए को इस क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध हैं। दो भिन्न-भिन्न भाषी राजनयिकों, व्यापारियों आदि के बीच होने वाले संभाषणों को संप्रेषणीय बनाने के लिए दुभाषी द्वारा उन संभाषणों के अनुवाद की आवश्यकता होती है। यह कार्य भी आशु-अनुवादक द्वारा ही संभव है।

आज के समय में अनुवाद सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं, कार्यालयों तक ही सीमित न रहकर एक स्वतंत्र व्यवसाय का रूप भी धारण कर लिया है। सभी को संस्थाओं तथा कार्यालयों में रोजगार करना पसंद नहीं होता है। कुछ लोग स्वयं का व्यवसाय करना पसंद करते हैं। ऐसे में अनुवाद को व्यवसाय बनाकर स्वयं तो रोजगारी बन ही रहे हैं लेकिन अधिकतर बेरोजगारों को भी रोजगार उपलब्ध कराये जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर पंजाब यूनिवर्सिटी से कानून की पढ़ाई किए नितिन गोयल के अनुवाद व्यवसाय को देखा जा सकता है- 'पंजाब यूनिवर्सिटी से कानून की पढ़ाई करने के दौरान नितिन गोयल को जेब खर्च के लिए एक काम की तलाश थी। उनके पत्रकार मित्र ने उन्हें सलाह दी कि वे अनुवाद का काम तलाशें, अच्छा काम मिल सकता है। नितिन ने काम तलाशा और पहले अंग्रेजी से हिंदी और अंग्रेजी से पंजाबी में अनुवाद करना शुरू किया। कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने वकालत शुरू की, लेकिन काम जम नहीं पाया। उधर, अनुवाद का काम जारी रहा। धीरे-धीरे उन्होंने krishnatranslations.com के नाम से अपनी

वेबसाइट बना दी। अब वे 200 से ज्यादा भाषाओं के अनुवाद का काम कराते हैं। साथ ही उन युवाओं को रोजगार भी दे रहे हैं, जो अनुवाद और भाषा के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं। नितिन ने बताया कि उनके पास 150 देशों से अनुवाद का काम आ रहा है। सबसे ज्यादा उनके पास अदालत, पुलिस, मेडिकल और फिल्मों का काम आ रहा है। सबसे ज्यादा काम पंजाबी भाषा का आता है। उदाहरण के तौर पर उन्होंने बताया कि यदि किसी पंजाबी पर कोई पुलिस केस हो गया तो उसने वहाँ की अदालत में बयान दे दिया कि उसे अंग्रेजी नहीं आती है तो पुलिस को सभी कागजातों और बयानों का अनुवाद पंजाबी में कराना होगा। इसके लिए पुलिस इंटरनेट के जरिए देखती है कि कौन सी भारतीय एजेंसी अनुवाद का काम करती है। उसके बाद वह वेबसाइट से संपर्क करती है और उन्हें अनुवाद का काम सौंपती है। इसी तरह से अब अंग्रेजी फिल्मों के सबटाइटल के अनुवाद का भी काम आ रहा है।...'

इस प्रकार भू को मंडलीय करने में अनुवाद कार्य का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज के बाज़ारवाद के युग में भारत एक बहुत बड़े बाज़ार के रूप में उभर कर सामने आया है। तब इस बाज़ार में अपने उत्पाद की बिक्री के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। इसके योग्य तो भारत की संपर्क भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी के विस्तार को देखते हुए उसे आज बाज़ार की भाषा कहना मेरे विचार से अनुचित नहीं होगा। उपर्युक्त विवेचित क्षेत्रों में हिन्दी अनुवाद के रूप में रोजगार के अवसर विपुल मात्रा में उपलब्ध हैं। मुझे लगता है किसी को अब रोजगार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

संदर्भ

अर्जुन चव्हान- अनुवाद चिंतन, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- प्रथम 1998, पृष्ठ-27

http://hindi_business-standard.com

www.sahityakunj.net

http://hindi_business-standard.com

http://msme.amarujala.com